अमृत प्रार्थना
ब्राह्मी वृक्ष रूप प्रार्थना

यह संसार इसको शरीर नहीं वृक्ष के समान समझना है। जैसे पीपल के वृक्ष को प्रणाम करते हैं। किसी को पता भी ना चले,सुबह उठकर के संसार रूपी वृक्ष को प्रणाम कर लीजिए।

प्रार्थना करें

हे प्रभु !मुझे पता नहीं था मैं तो इसे संसार समझ रहा था, लेकिन यह तो ब्राह्मी वृक्ष है। इस ब्राह्मी की जितनी भी टहनियाँ डालियाँ हैं वे सब इस वृक्ष की शाखाएं हैं। पशु- पक्षी, कीट-पतंगे,देवी-देवता। अतः मैं इन सब शाखाओं को भी प्रणाम करता हं।
और यह शरीर भी इस वृक्ष की एक शाखा ही है ।जिसको मैंने अपना समझ लिया है। मैं मन से इस संसार रूपी वृक्ष की परिक्रमा करता हूं ।और किसी बात का अभिमान नहीं करूंगा।मोह, ममता ,आसक्ति नहीं करूंगा।

हे प्रभु !इन्हें आप नष्ट करें।

ॐ शांती शांती शांती